दैनिक अरदास

१. श्री गंगा, यमुना, सरस्वती, माधव त्रिवेणी के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
२. सर्व देवता, चौबीसों अवतारों के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
३. श्री बद्री नाथ, केदार नाथ, रामेश्वर, जगन्नाथ, श्री अमर नाथ, सर्व तीर्थों के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
४. श्री बाबा अविनाशी मुनि जी महाराज, श्री बाबा श्रीचन्द जी महाराज के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
५. श्री बाबा जल ज्योति शाह जी, ज्योति स्वरूप सुथरे शाह जी महाराज के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
६. श्री बाबा रज्जाल शाह जी, श्री बाबा निहाल शाह जी, श्री बाबा कंगाल शाह जी, श्री बाबा झैगड़ शाह जी, श्री बाबा मुस्ताक शाह जी, श्री बाबा दीदार शाह जी, श्री बाबा ब्रह्मशाह जी, श्री बाबा संगत शाह जी, श्री बाबा अनूप शाह जी, श्री बाबा बजान शाह जी, श्री बाबा बहादुर शाह जी, श्री बाबा महबूब शाह जी, श्री बाबा तनक शाह जी महाराज पन्थ के वालियों के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।
७. साढे बाहर घरानों के चरण कमलों में ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम श्रीराम।

गुरु महाराज सच्चे पिता जगत के वाली, चार पहर रात्रि सुख की बितायी है, चार पहर दिन भी सुख का बिताना है। आठों पहर

सुखाली सुख करे, सवालियों के सवाल पूरे करे, बन्दी मानव की बन्द खलास, नगर खेड़ा आबाद रहे, राजा राज करे, प्रजा सुखी बसे, साधु का संग, गुरमुख का मेल, भजन का प्रताप, दुख क्लेश का नाश, अड़े सो झड़े, शरण पड़े सो तरे, काम सच्चे पातशाह सुथरे शाह जी महाराज आप करे। डेरा, बस्ती आबाद रहे, लौ, लंगर चलते रहें, जहाँ तहाँ फकीर मर्दों के धरने लगे हैं तहां तहां सहायता करना, मुश्किलें आसान करना, फकीर, मर्दों के दम-कदम नीरोग रखना, गौ, ब्राह्मण की वृद्धि, धर्म की जय-जयकार, जंजू-टीके की लाज, पन्थ का वाद्धा, अमृत समय की अरदास, तेरे सच खण्ड में प्रवाण। अक्षर वाद्धे-घाटे, भूल-चूक बख्शनहार, सतगुरु बाबा सुथरे शाह जी महाराज करो प्रवाण। प्राणी मात्र का हो कल्याण।

शुरू करो दण्डवत् ये वन्दना सर्व कला समरथ
डोलन ते राखौ प्रभु नानक देकर हत्थ
अवगुण हारे की बैनती सुनो गरीब नवाज
जे मैं पूत कपूत हूँ, बहुर पिता को लाज
नहीं विद्या नहीं बाहूबल, नहीं खरचन को दाम।
तुलसी ऐसे पतित की, पत राखो भगवान।
गुरु बोहढ़ा वाले बाबा जी तुहाडी सदा ही जय।
जयकारे वाले नूँ मीठियां मुरादां।

बोल सांचे दरबार की जय
सच्चियां जोतां वाली माता तेरी सदा ही जय।